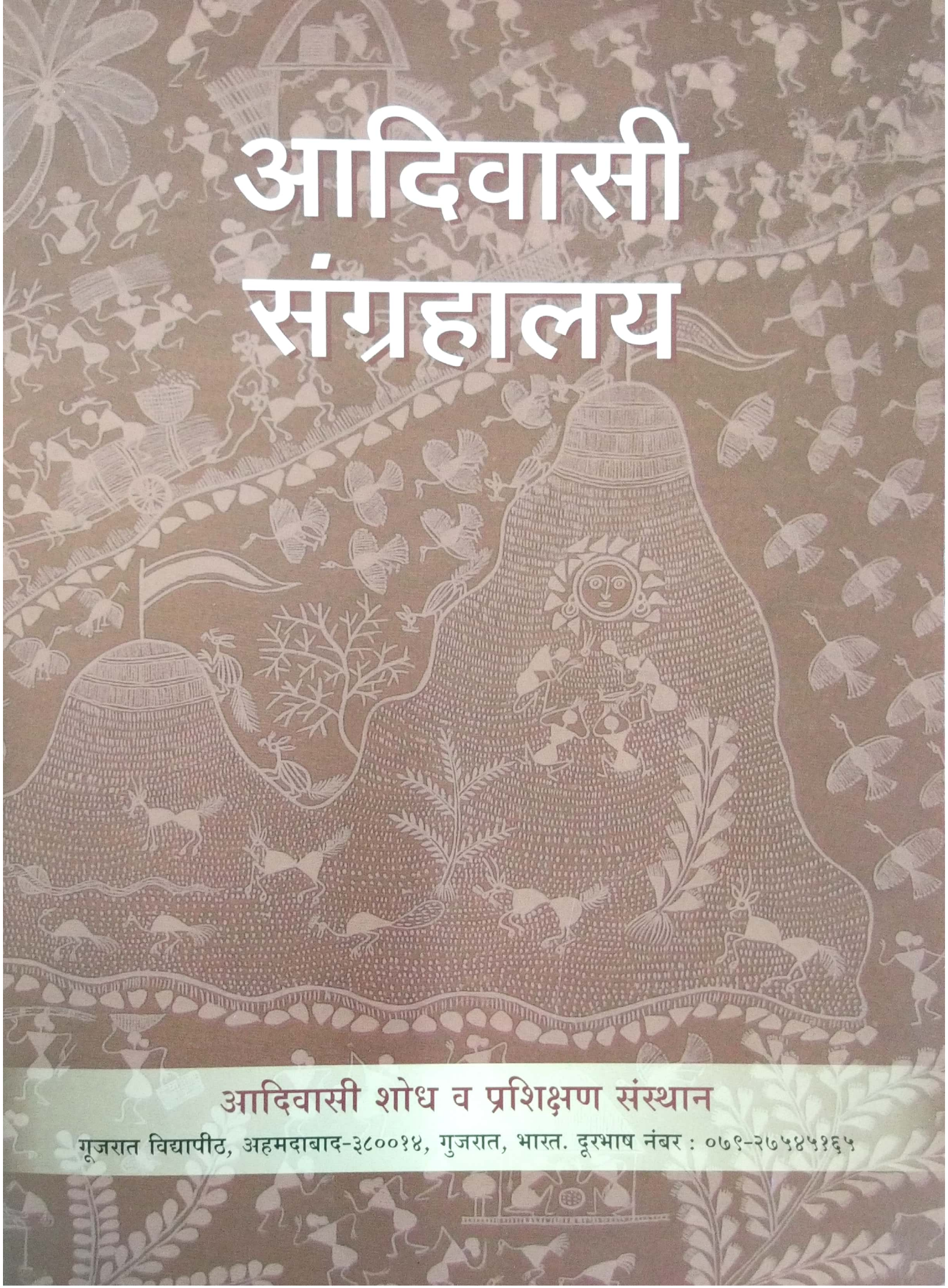

आदिवासी संग्रहालय

आदिवासी शोध व प्रशिक्षण संस्थान

गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत. दूरभाष नंबर : ०७९-२७५४५१६५

Scanned with OKEN Scanner

पृष्ठ भुमि

गूजरात विद्यापीठ की स्थापना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के द्वारा ई.सन् १९२० में अहमदाबाद शहर में की गई। यह विद्यापीठ भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय विद्यापीठ (National Institute of University Education) के नाम से प्रारंभ की गयी थी। गांधीजी न केवल विद्यापीठ के संस्थापक थे बल्कि इसके कुलपति के पद पर दि.१८-१०-१९२० से दि.३०-०१-१९४८ तक कार्यभार संभाले। गांधीजी के निधन के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल ने दि.१८-०६-१९४८ से दि.१५-१२-१९५० तक विद्यापीठ के कुलनायक के पद को गौरवान्वित किया एवं कुलपति का कार्यभार भी संभाला। सरदार वल्लभभाई पटेल के उपरांत आदरणीय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने दि.१८-०३-१९५१ से जीवन पर्यन्त, आदरणीय मोरारजीभाई देसाई ने दि.१६-०६-१९६३ से दि.१०-०४-१९९५ जीवन पर्यन्त, आदरणीय प्रो. रामलालभाई परीख दि.२३-०६-१९९६ से दि.२१-११-१९९९ जीवन पर्यन्त, डॉ. सुशीलाबेन नय्यर दि.२६-०६-२००० से दि.०३-०१-२००१ जीवन पर्यन्त, आदरणीय नवीनचंद्र बारोट दि.२६-०६-२००१ से दि.०१-०८-२००२ जीवन पर्यन्त, आदरणीय नवलभाई शाह दि.०४-१०-२००२ से दि.१५-०२-२००३ जीवन पर्यन्त, आदरणीय रविन्द्र वर्मा दि.१८-०७-२००३ से दि.०९-१०-२००६ तक कुलपति के पद का कार्यभार सफलता पूर्वक संभाला। विशिष्ट गांधीवादी विचारक एवं गांधी कथा के प्रणेता श्रीमान नारायणभाई देसाई वर्तमान विद्यापीठ के कुलपति के पद पर दि.२३-०७-२००७ से कार्यरत हैं।

विद्यापीठ की शुरुआती दशक में गुजराती, मराठी, बंगाली, पारसी एवं अंग्रेजी भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान था। परवर्ती समय में विद्यापीठ में अन्य विषयों जैसे कि भारतविद्या (इन्डोलॉजी), फार्मसी, इतिहास, गणित, तत्वज्ञान, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, संगीत आदि की शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था थी।

गूजरात विद्यापीठ ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक विशेष भूमिका निभाई थी। आंदोलन के दौरान छात्र और अध्यापकगण शामिल होने के कारण सन् १९३० से लेकर सन् १९३१ तक विद्यापीठ के शिक्षण कार्य में रुकावट आई थी। विद्यापीठमें इस प्रकार की परिस्थिति तत्कालीन सरकार की अनुमति के उपरांत भारत छोड़ो आंदोलन के समय में उत्पन्न हुई थी। जिसके कारण सन् १९४२ से सन् १९४५ तक विद्यापीठ के शिक्षण कार्य में रुकावट आई थी।

विद्यापीठ के प्रांगण में सन् १९४७ के जून मास में महादेवभाई देसाई समाजसेवा महाविद्यालय की स्थापना की गई। यह विद्यालय शुरुआत में ८(आठ) छात्रों के सहयोग से पाठ्यक्रम का आरंभ किया था जो आज एक पूर्ण सज्जित निवासीय महाविद्यालय के रुप में शिक्षा प्रदान कर रही है। यह महाविद्यालय स्नातक, अनुस्नातक, विद्यावाचस्पति इत्यादि उपाधिप्रदान करता है।

गूजरात विद्यापीठ की ग्रामभिमुख एवं प्रयोगात्मक शिक्षाप्रणाली को राष्ट्रीय एवं आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्व दिया गया है। इसे ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने विद्यापीठ को सन् १९६३ में नामी विश्व विद्यालय (Deemed University) घोषित किया। विद्यापीठ की सर्वांगीण विकास के लिए अनुदान आयोग का संपूर्ण सहयोग प्राप्त है। सन् २००० में विद्यापीठ ने अपने कार्यकाल के ८० वर्ष पूर्ण किए।

गांधीजी की विचारधारा एवं आदर्श को ध्यान में रखते हुए शोध, तालीम, बुनियादी एवं विस्तरण शिक्षा प्रदान करना गूजरात विद्यापीठ के मुख्य उद्देश्य हैं।

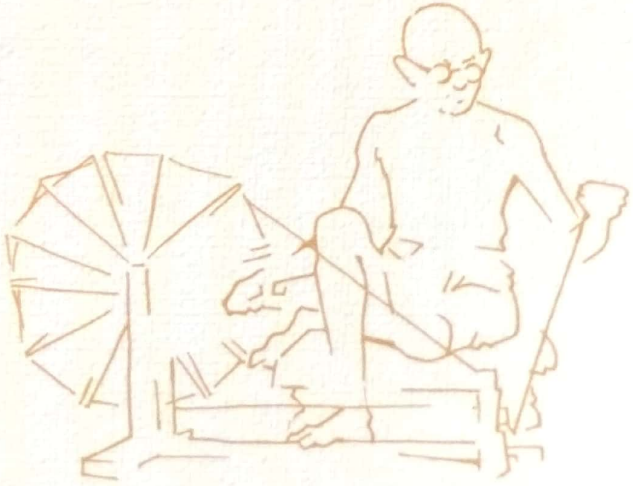

Scanned with OKEN Scanner

आदिवासी संग्रहालय

आदिवासी शोध व प्रशिक्षण संस्थान

गूजरात विद्यापीठ,

अहमदाबाद - ३८००१४, गुजरात, भारत. दूरभाष नंबर : ०७९-२७५४५१६५

समय : प्रात: ११.०० से सायं ६.०० (सोमवार से शुक्रवार)

समय : प्रात: ११.०० से सायं ५.०० (शनिवार)

Scanned with OKEN Scanner

आदिवासी शोध व प्रशिक्षण संस्थान : (एक परिचय)

भारत के विभिन्न राज्यों में बसनेवाले जनजातियों के जीवन एवं संस्कृति से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करने के लिए भारत सरकार ने तृतीय पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत् १० लाख से अधिक आदिवासी आबादीवाले प्रदेश में एक आदिवासी शोध एवं तालीम संस्था की स्थापना करने की परिकल्पना की। इस संदर्भ में गूजरात विद्यापीठ ने आदिवासी शोध एवं तालीम संस्थान को प्रारंभ करने के लिए आवेदन किया। सरकार ने विद्यापीठ की इस संस्था को आरंभ करने की अनुमति दी। सन् १९६२ में यह संस्था विद्यापीठ के प्रांगण में शुरु हुई।

आदिवासी शोध व प्रशिक्षण संस्थान के उद्देश्य :-

(१) आदिवासीयों के जीवन की परिस्थितियों एवं समस्याओं का अध्ययन, आदिवासी विस्तार का नियोजन एवं आदिवासी विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन।

(२) अदिवासी क्षेत्रों की समस्याओं का प्रलेखन केन्द्र।

(३) आदिवासी से संबंधित नृविज्ञानीय एवं भाषागत अध्ययन केन्द्र।

(४) आदिजाति विभाग के अधिकारी, ग्राम सेवक, तलाटी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, विस्तरण कार्यकर्ता, अन्य स्थानीय अधिकारी एवं स्वयंसेवी संगठनों के कार्यकर्ताओं को अल्पकालीन परिचय एवं तालीम देना।

आदिवासी शोध व प्रशिक्षण संस्था का मुख्य लक्ष्य शोध, तालीम और आदिवासी संग्रहालय का संचालन करना, जिसका पूर्ण विवरण निम्न अनुसार दर्शाया गया है :

(१) शोध :

आदिवासी शोध एवं तालीम संस्था आदिवासीयों की आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक ढांचा एवं संगठन, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं विभाजन, उनकी पहचान एवं जनसंख्यागत विशेषताएँ, विकासलक्षी कार्यक्रमों का आदिवासी जीवन पर प्रभाव इत्यादि विषयों पर शोधकार्य संपादन करती है। शोधसे प्राप्त परिणाम द्वारा आदिजाति विकास के लिए सही नियोजन प्रस्तुत करना एवं संस्थान की तालीम कार्यक्रमों की गुणवत्ता में मूल्यवृद्धि करने में मदद करता है। हाल ही में आदिमजाति एवं बिखरी हुई जनजाति के कुछ क्रियाभिमुख सर्वेक्षण एवं शोधकार्य किए गए हैं। जिसके निष्कर्ष के आधार पर इन आदिम जातिओं के विकास के लिए सूक्ष्म परियोजना का अम्लीकरण हुआ है।

(२) प्रशिक्षण :

यह संस्था आदिवासी विस्तार में कार्यरत अधिकारियों के लिए आदिवासी जीवन और संस्कृति के विषय में

Scanned with OKEN Scanner

तालीम कार्यक्रम का आयोजन करती है। उपरांत वनविभाग के कर्मचारी, तलाटी, ग्रामसेवक, सरपंच, पटेल, युवा कार्यकर्ताओं, स्वंयसेवी संस्था के कार्यकर्ताओं से आदिजाति के संबधित विभिन्न विषयों पर तालीम प्रदान करती है।

(३) संग्रहालय :

आदिवासी संग्रहालय का विकास एवं प्रबंधन करना संस्था का एक मुख्य उद्देश्य है। गुजरात का आदिवासी जीवन, आजीविका, कला, संस्कृति, आभूषण, संगीत, वाद्य, एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर शिल्प का उत्कृष्ट संचयन किया है। यह संग्रहालय दर्शकों को गुजरात के आदिवासी गांव का एक जीवंत अनुभव प्रदान करता है एवं गुजरात के आदिवासियों की कला एवं संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संग्रहालय में विभिन्न आकार की चित्रकला का संग्रह उपलब्ध है जिसमें (३५ मि.मी.) के ४४२८, एवं (१२० मि.मी.) के २११, आदिवासी जातियों के चित्र संग्रहित हैं। इसी विभाग में जनजातियों के जीवन संबंधित (३५ मि.मी.) की ७२०, (१२० मि.मी.) की ७२ रंगीन पारदर्शी चित्रों का संग्रह है। संग्रहालय में भारत के विभिन्न आदिवासीयों पर निर्मित (२५) चलचित्र का संग्रह है।

यह संस्था 'आदिवासी गुजरात' नामक द्विवार्षिक पत्रिका सन् १९७८ से प्रकाशित कर रही है।

इस संस्था में एक विशेष ग्रंथालय है जिसमें सामाजिक विज्ञान, नृविज्ञान एवं आदिजाति संबधित ग्रंथों का उत्कृष्ट संग्रह है। ग्रंथालयमें आदिवासी संबधित शोध पत्रिकाएँ भी उपलब्ध हैं।

संस्था के शोध तालीम एवं अन्य कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संपादित करने के लिए सरकार संपूर्ण सहायता प्रदान करती है।

संस्था की उपलब्धियाँ :

संस्था ने प्रारंभ से लेकर मार्च २०१२ तक निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं :

(१) यह संस्था ने दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन शोध अध्ययन पूर्ण किए हैं। इन शोधकार्यों के परिणाम के आधार पर अनेक परिसंवादों का आयोजन किया गया है।

(२) अनुसूचित जातियों के विषय पर भी अध्ययन और परिसंवाद का आयोजन किया गया है।

(३) संस्था ने सरकारी अधिकारियों के लिए दिगन्यास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

(४) संस्था ने तृणमूल स्तर एवं स्वयंसेवी संगठन में कार्यरत कर्मचारियों के लिए भ्रमण समावेशी तालीम कार्यक्रम का भी आयोजन किया है।

(५) संस्था के द्वारा अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किए गए हैं।

(६) संस्था में एक आदिवासी संग्रहालय है जिसमें गुजरात के आदिवासियों के शिल्प एवं चित्रकला का संग्रह एवं प्रदर्शन है।

आदिवासी शोध एवं तालीम संस्था के कार्यक्रम की समीक्षा एवं संस्था को सही मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए एक उपदेश समिति की रचना की गई है। इस समिति में राज्य सरकार के अधिकारी, नृवंशविज्ञान एवं समाजशास्त्र के प्राध्यापक शामिल हैं।

Scanned with OKEN Scanner

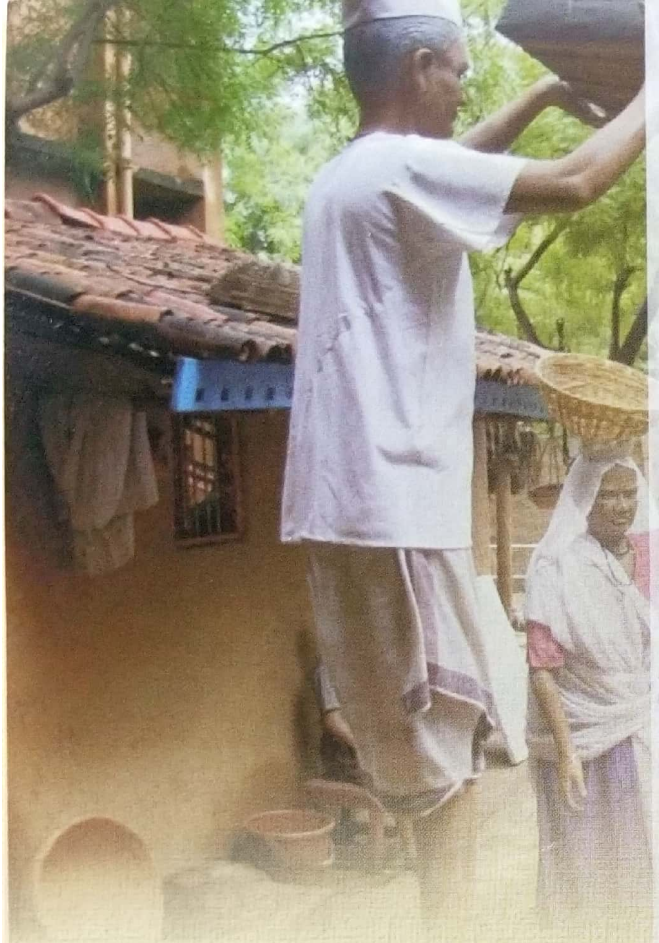

गुजरात के आदिवासी समाज

भारत की कुल आदिवासी आबादी का दसवाँ भाग गुजरात में है एवं गुजरात राज्य की कुल आबादी का सातवाँ भाग आदिवासी प्रजा है जो कि राज्य के पूर्व में स्थित बारह जिलों में निवास करते हैं। यह विस्तार आदिवासी पट्टी के नाम से प्रख्यात है जो कि अंबाजी से आरंभ होकर अरावली, विंध्याचल तथा सातपुड़ा की पर्वतमाला को स्पर्श करते हुए वलसाड़ जिले के उमरगाँव तालुका में समाप्त होती है। ये विस्तार गुजरात राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का पंद्रह प्रतिशत है।

गुजरात में पच्चीस समुदाय के आदिवासी पाये जाते हैं। इनमें (१) भील (२) हलपति (३) ढोडिया (४) गामित (५) चौधरी (६) राठवा (७) धानका (८) वारली (९) पटेलिया (१०) कोंकणा (११) नायका (१२) सीदी इत्यादि गुजरात की मुख्य जनजातियाँ हैं। संख्या के आधार पर भील, ढोडिया, गामित, चौधरी एवं राठवा जनजातियों की संख्या अधिक है। ज्यादातर जनजातियाँ वर्ण संकर भी हैं। फिर भी कुछ जनजातियाँ जैसे भील ओस्ट्रेलोईड तथा सीदी निग्रोई लक्षणवाले पाये जाते हैं।

इस पुस्तिका में हमने संग्रहालय में स्थित आदिवासी शिल्पकला, चित्रावली, आजीविका के उपकरण, पोषाक, प्रसाधन, वाद्य के उपकरण, खिलौने एवं आदिवासी की दैनिक जीवन में उपयोग में आनेवाली सामग्री के विषय में वर्णन करने का प्रयत्न किया है।

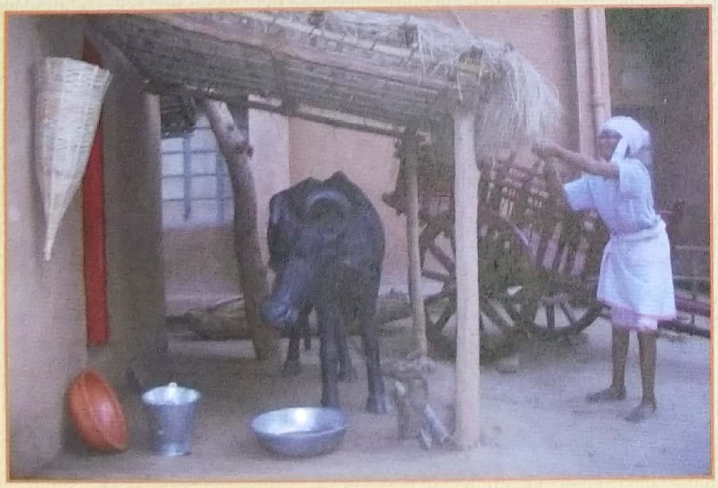

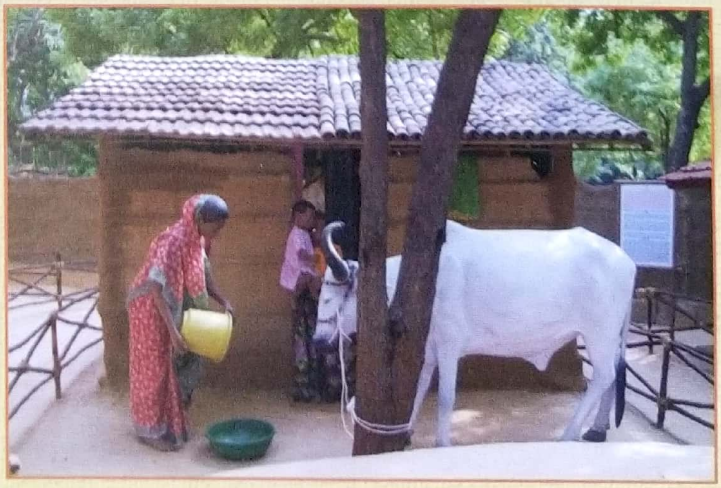

Scanned with OKEN Scanner

चित्रावली (डाइरोम) आवास

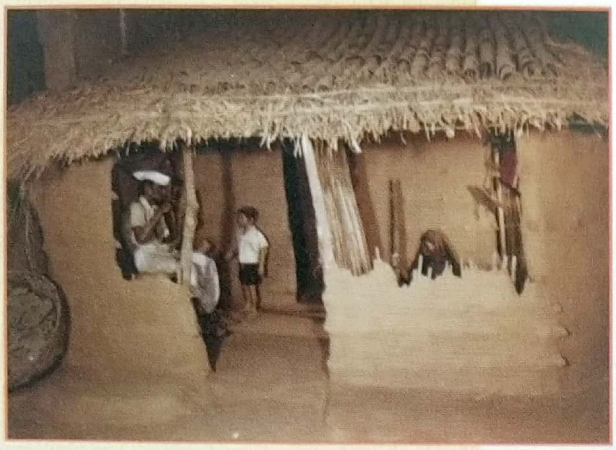

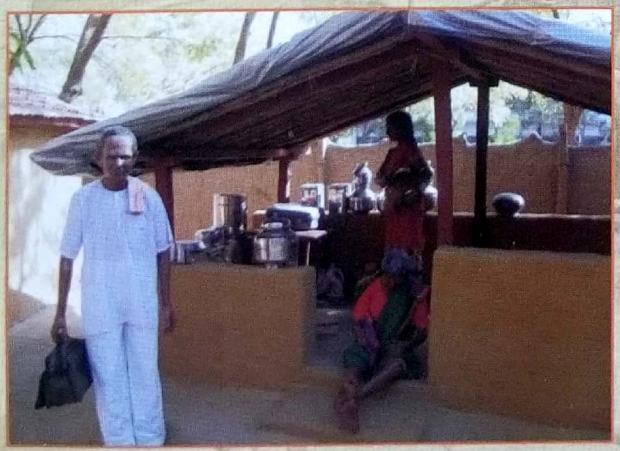

गुजरात के आदिवासी जातियों में संस्कृति के साथ-साथ उनके निवास मे भी भिन्नता दृश्यमान होती है। उनके आवास ज्यादातर एक कोठरीवाले एवं आयातकार होते हैं। उनके आवास ज्यादातर मिट्टी, बाँस, तरकट, बरु, गारा से बने होते हैं। आज के समय में इनके आवास के छत ज्यादातर खपरैल या मेंग्लोरी टाइल्स से बनाये जाते हैं। पुराने समय में घास, तरकट बरु का उपयोग करके घर के छत बनाये जाते थे जो कि आज के समय में कुछ विस्तार में पाये जाते हैं। उत्तर एवं मध्य गुजरात में आदिवासी के आंगन प्राप्य चारों ओर हरे बाँस की बाड़ा से घिरे हुए पाये जाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

गृहस्थी के साधन-प्रसाधन-सामग्री

आदिवासी मुख्यतः रसोई एवं भोजन हेतु विशिष्ट बर्तन का उपयोग करते हैं। अधिकतर सामग्री मिट्टी से बनाई जाती है, इसके अतिरिक्त वे पित्तल, एल्यूमिनियम एवं लकड़ी के गृहस्थी के उपकरण उपयोग में लाए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर आंटा सानने के लिए 'कठौता' नामक उपकरण का उपयोग करते हैं जो कि लकड़ी से बनाया जाता है। अन्य गृहस्थी के उपकरण में विभिन्न प्रकार की टोकरियाँ, पंखा, लकड़ी की कंघी, मिट्टी के दीए, इत्यादि अन्य मनोरम्य सामग्रियाँ मुख्य हैं।

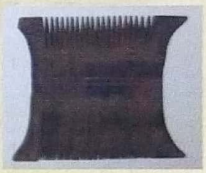

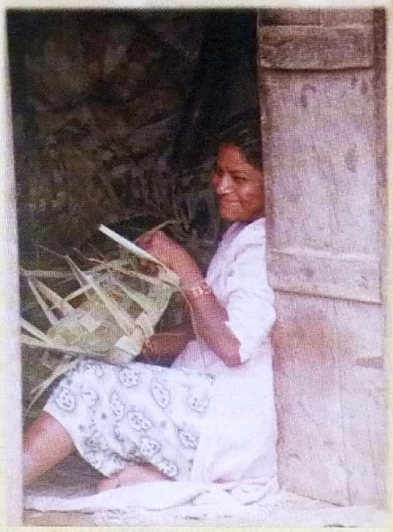

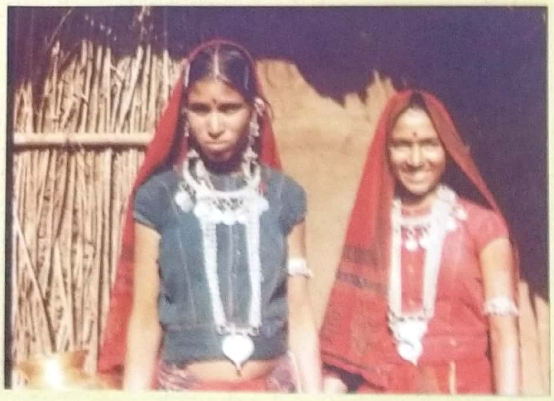

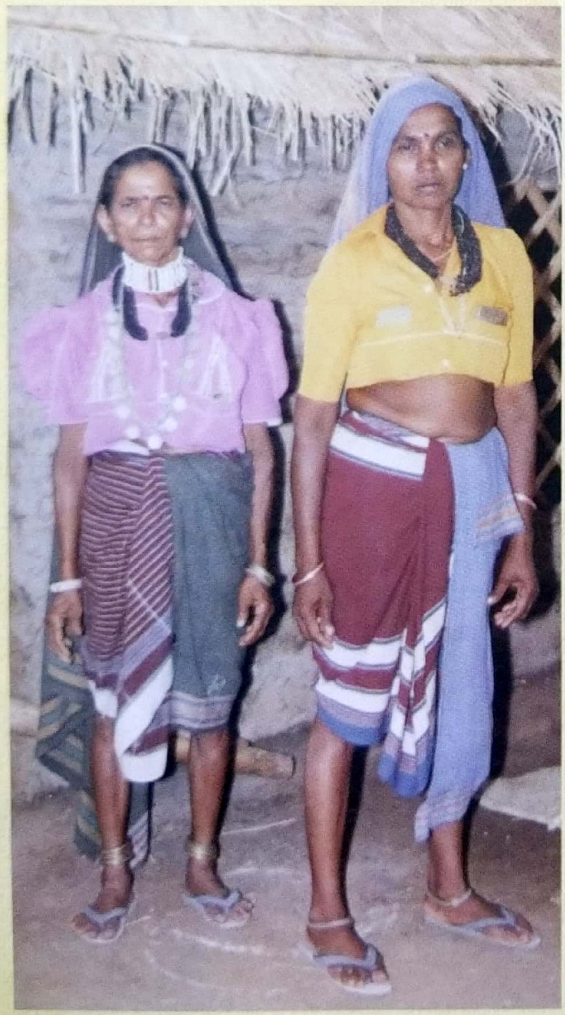

वेशभूषा

आदिवासी जाति के समुदाय एवं उनके क्षेत्र के अनुसार वेशभूषा में अन्तर पाये जाते हैं। उदाहरण के तौर पर उत्तरपूर्व गुजरात के भील अपने आपको धनुष, तीर, बंदूक एवं तलवार, धारिया (गंड़ासा) जैसे शस्त्रों से सुसज्जित रखते हैं। दक्षिण गुजरात के भील आदिवासी लंगोटी पहने हुए पाये जाते हैं। इसी तरह नर्मदा जिले की महिला आदिवासी की मुख्य पोषाक चणिया (घाघरा) है। जब कि दक्षिण गुजरात की आदिवासी महिलाओं का मुख्य परिधान साड़ी है। उत्तर गुजरात की भील, राठवा, पटेलिया, नायकड़ा की महिलाएँ कलीदार घाघरा तथा ऊपरी हिस्से में झुलरी पहनती हैं। विवाहित आदिवासी महिला का मस्तक वस्त्र से आवृत्त हुआ पाया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

आभूषण

आदिवासी पुरुष एवं महिलाएँ पारंपरिक रीत से आभूषणप्रिय होती हैं। वर्तमान समय में आदिवासी पुरुषों में आभूषण के प्रति रुचि में कमी आई है। संग्रहालय में प्रदर्शित जनजातियों के विभिन्न प्रकार के आभूषणों से इस समाज की आभूषण के प्रति लगाव स्वयंप्रतीत होता है। इन आभूषणों के निर्माण के लिए चूने का पथ्थर, कौड़ियाँ, सीपें, चांदी, अंग्रेज जमाने के चांदी के सिक्के, पित्तल, कांसा, एल्युमिनियम, इत्यादि वस्तुओं का उपयोग होता था। हिन्दू सुनारजाति के लोग इन आभूषणों का निर्माण करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

आदिवासी छबि कला

मध्य गुजरात के राठवा आदिवासी के घर की दीवारे बाँस की पट्टी से बनाकर उसके ऊपर मिट्टी की लिपाई करते हैं। तत्पश्चात् किसी भी खुशी के समय पे अपने धर्मगुरु (बाडवा) को आमंत्रित करते हैं। बाडवा देव धर्मगुरु के साथ-साथ एक चित्रकार भी होते हैं जिनके द्वारा घर में बनाई हुई दीवारों पर विभिन्न रंगों का उपयोग करके अपने स्थानीय देवता पिथोरादेव एवं उनके कुटुंब का चित्रांकन करवाते हैं । पिथोरादेव का यह चित्रांकन गुजरात के जनजाति समाज में सबसे शुभ माना जाता है।

वारली छबि कला

दक्षिण गुजरात के वारली जनजातियों के लोग विवाह के समय पर अपने घर की दीवारों पर विभिन्न रंग का चित्रांकन करते हैं। खास करके महिलाएँ चावल के चूरे से कन्या के घर की दीवार पर विभिन्न प्रकार के चित्र बनाते हैं । इन सब चित्रों का संग्रह अपने संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है।

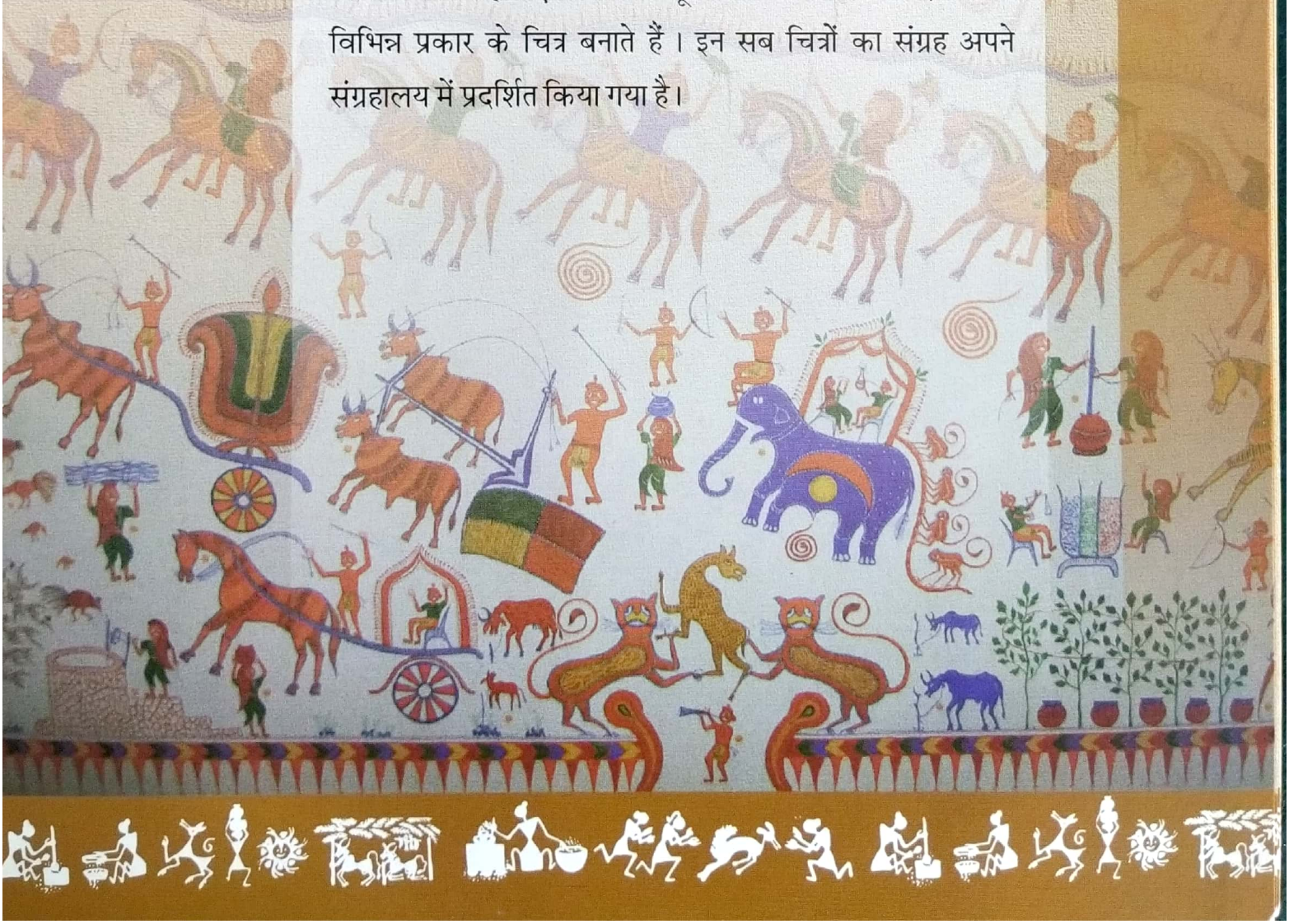

Scanned with OKEN Scanner

आदिवासीयों के उत्सव

आदिवासीयों के मुख्य उत्सव निम्नानुसार हैं :

बाघ बारस : डांग प्रदेश की जनजातियों का यह एक मुख्य त्यौहार है।

दीवाली : खास कर पंचमहाल जिले के आदिवासी यह त्यौहार मनाते हैं जिसमें गुजराती परंपराओं का प्रभाव देखा गया है। आदिवासी लोग इस त्यौहार पर बिन उपयोगी सामान को घर से निकालकर दूर खेत में छोड़ आते हैं।

गोदरी : इस त्यौहार में आदिवासी लोग गाय की पूजा करते हैं। इस त्यौहार का पालन करने के लिए गाय के झुंड का दर्शन करते हैं। इन आदिवासीयों के समाज में भी गाय माता की बड़ी महिमा है।

दिवासो : यह त्यौहार गुजरात के हलपति आदिवासी पालन करते हैं जिसमें वे गुड्डा-गुड़ियों का विवाह करवाते हैं। इस त्यौहार को स्थानीय भाषा में ढींगला-ढींगली कहते हैं।

वसंतोत्सव : गामित आदिवासी वसंतोत्सव पर वसंत के मेले में जाते हैं तथा साथीदार की कमर पर हाथ रखकर नृत्य करते हुए 'चालणिया' गीत गाते हैं। पुरुष वर्ग नदी में स्नान करते हैं एवं मछली का शिकार भी करते हैं।

ऊंदरा उत्सव : गामित आदिवासी फसल काटने के दौरान ऊंदरा उत्सव मनाते हैं जहाँ चूहों को खेत से दूर करने का प्रयास किया जाता है।

पचवी : डांग के आदिवासी नागपूजा कर 'पचवी' त्यौहार मनाते हैं।

पौला : मंदी के कारण अनुपयोगी पड़े रहे वाहनों को पुन : कार्यान्वित करने हेतु यह त्यौहार मनाया जाता है।

दशहरा : गुजरात के आदिवासी लोग दशहरे के अवसर पर फसल की देवी कणसरी माता की पूजा करते हैं।

मेले

गुजरात के आदिवासी विभिन्न प्रकार के मेलों में भाग लेते हैं। उदाहरण के लिए गुजरात के आदिवासी चूलमेलो, चाडिया मेलो, अग्नि देवी की मिन्नत, गोल गधेड़ानो मेलो, लवीडी, खेचु मेलो, श्रध्धानो मेलो इत्यादि मनाते हैं।

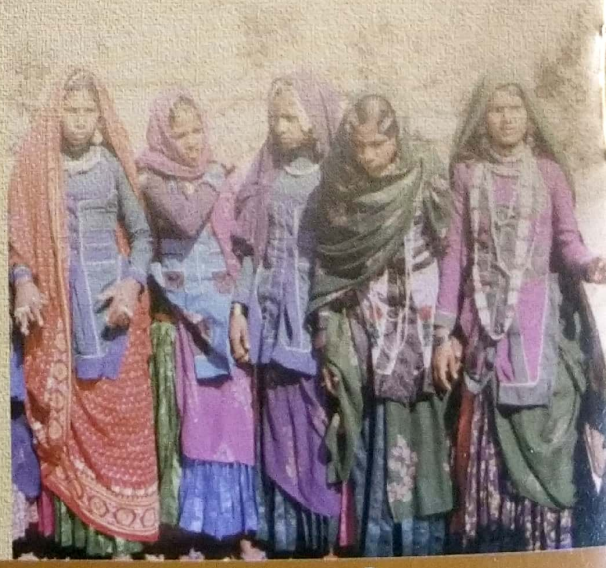

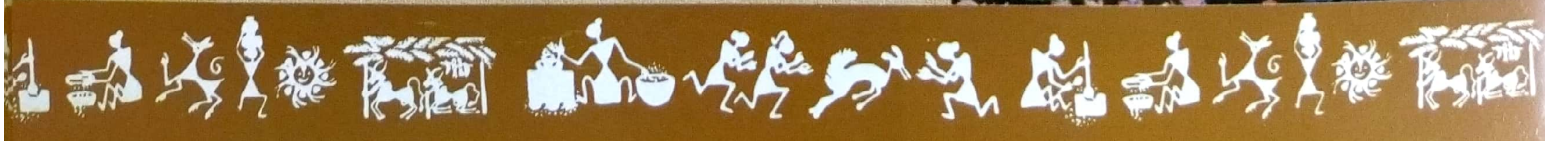

Scanned with OKEN Scanner

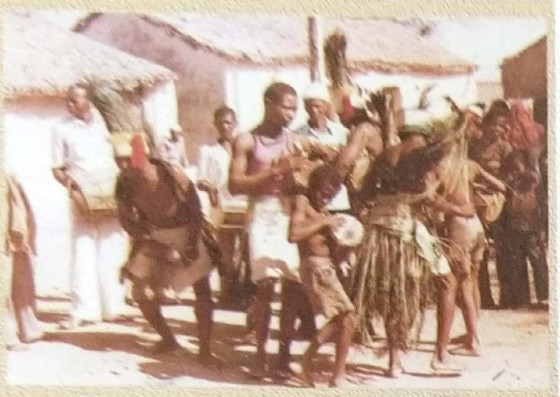

गुजरात के आदिवासीयों के संगीत वाद्य एवं नृत्य

संगीत एवं नृत्य आदिवासी जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। संगीत और नृत्य में वे विविध प्रकार के वाद्य जैसे कि ढोल, नगारा, बांसुरी, पावा, धातु की थालियाँ इत्यादि का उपयोग करते हैं। इन वाद्यों को बनाने के लिए बाँस, चमड़े और अन्य धातुओं का उपयोग करते हैं।

जब वे नृत्य करते हैं तब संगीत, वाद्य एवं शरीर के उत्तम तालमेल का ध्यान रखते हैं। यह दृश्य आकर्षक होता है। जब आदिवासी स्त्री - पुरुष मिलकर नृत्य करते हैं तब हर्षोल्लास का वातावरण बन जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

गुजरात के आदिवासीयों के रीत-रिवाज और धर्म

आदिवासी और उनके समाज के भाग्य अद्रश्य दैवी शक्ति के साथ उनके संबंध पर आधारित है। जब भी समाज मे कोई कठिनाई या विपदा जैसे कि फसल नष्ट हो जाना, संपति का आश्चर्यरुप से नष्ट होना, कौटुंबिक समस्या, रोग, वंध्या, आकस्मिक मृत्यु, मिरगी अपस्पार इत्यादि को आसानी से दैवीशक्ति का प्रकोप माना जाता है। अगर दैवी शक्ति का अपमान करते हैं तो उपरोक्त विघ्न आ सकते हैं। इसके कारण आदिवासी समय समय पर इन देवी-देवताओं को विभिन्न प्रकार के भोग अर्पण करके सुख-शांति की प्रार्थना करते हैं।

दैवी शक्तियों को शांत एवं खुश करने के लिए आदिजाति समाज बलि एवं भेंट चढ़ाते हैं। भेंट में मिट्टी के घोड़े एवं मूर्तियाँ अर्पण की जाती हैं। इन मूर्तियों को प्रजापति (कुम्हार) समाज के लोग बनाते हैं। पूजा-स्थल में यदि किसी व्यक्ति को एक साथ में २०-३० घोड़े की मूर्तियों का दर्शन होता है तो उसे गृढवैदी सभा में पहुंचने का सुख होता है।

दक्षिण गुजरात के आदिवासी मिट्टी से बनाये हुए बाघ की प्रतिमा की पूजा करते हैं। छोटा उदयपुर के राठवा आदिवासी लोग विवाह के दौरान देवी को खुश करने के लिए हाथी की प्रतिमा लगाते हैं। पहले वर्णन किया गया है कि राठवा लोग पीथोरादेव और उनके संबंधित चित्र बनाकर उनकी पूजा करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

दक्षिण गुजरात के कोंकणा आदिवासी लोग अखात्रीज (अक्षय तृतीया) के उत्सव पर पारंपरिक नृत्य के समय हिन्दू देवी-देवताओं के मुखौटे पहनकर नृत्य करते हैं।

उत्तर गुजरात के गरासिया जनजाति के गाँवों में देवडा (छोटा मंदिर) पाये जाते हैं। ये मंदिर तीन छोटे दीवार और परैल की छत से ढकी होती है। इस मंदिर के भीतर अनेक सारे हिन्दू देवी-देवताओं का टेराकोटा का फलक एक रेखामें सजाया हुआ होता है। यह फलक नाथद्वार के समीप राजस्थान राज्य के मोलेला गाँव के कुम्हारों द्वारा बनाई जाती है।

आदिवासी जनजाति अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए स्मृतिस्तंभ का निर्माण करते हैं। पहले के जमाने में यह स्तंभ बनाने के लिए पत्थर का और वर्तमान समय में काठ का उपयोग होता है। उदाहरण के तौर पर गामित लोग नगरदेव काठ की प्रतिमा का स्थापन करके पूजा करते हैं।

भूत, प्रेत, चुड़ैल, दुष्ट आत्मा को नियंत्रणमें लाने के लिए तांत्रिक बहुत सारे सामान का उपयोग करते हैं जो संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है।

दक्षिण गुजरात के आदिवासीयों में एक प्रथा है कि मृत व्यक्ति की अंत्येष्टि के पश्चात् निकट की नदी में से एक पत्थर गाँव को ले जाते हैं तथा मिट्टी का पिंडा बनाकर स्थापित करते हैं। मान्यता यह है कि मृतात्मा को रहने के लिए आवास उपलब्ध हो गया है।

Scanned with OKEN Scanner

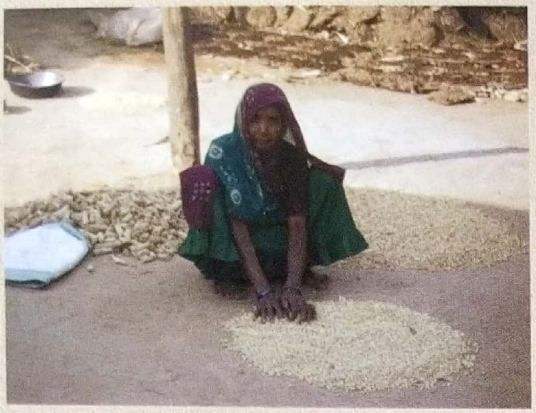

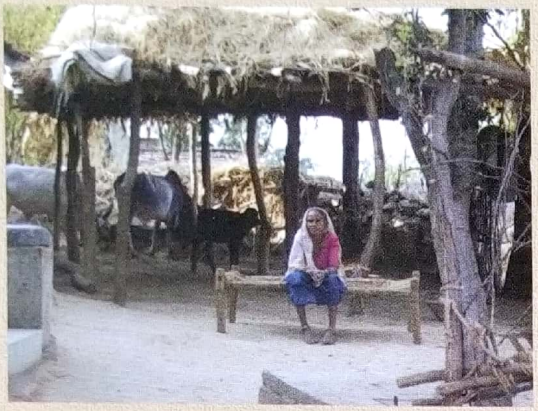

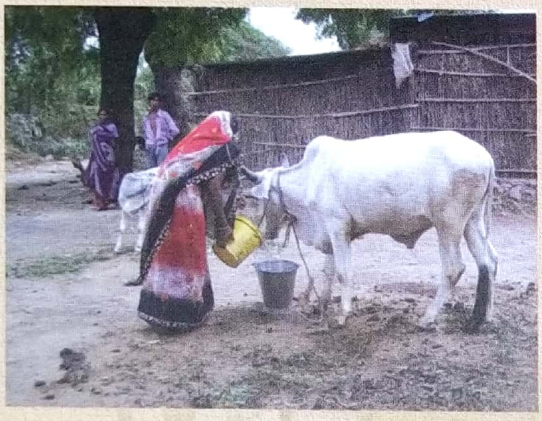

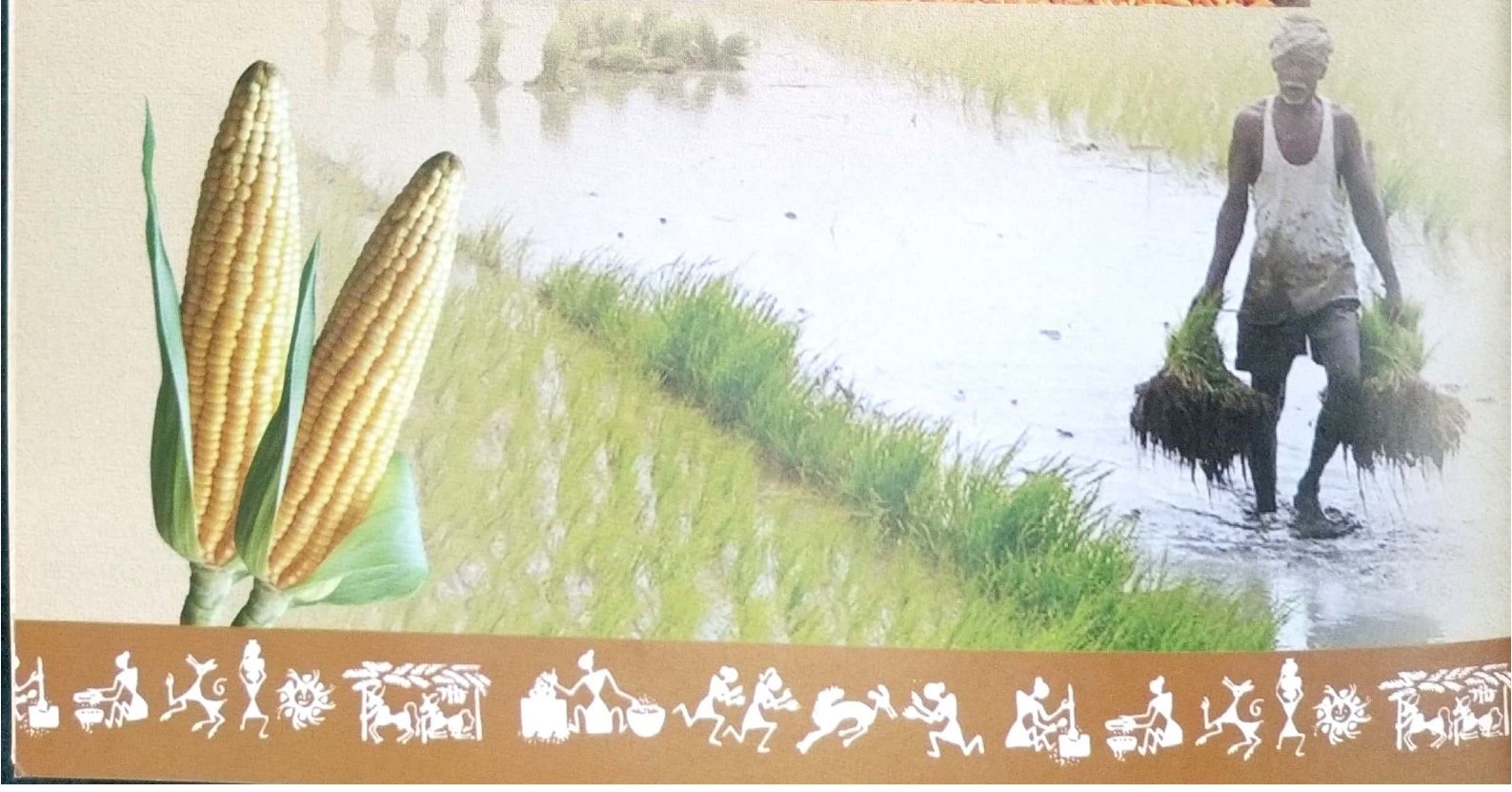

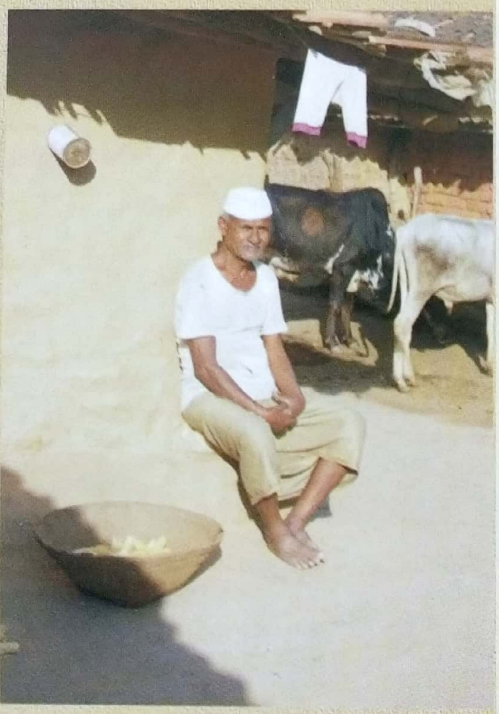

आदिवासीयों की आजीविका

आदिवासी लोग अधिक मेहनती होते हैं और अपने जीवन निर्वाह के लिए कृषि पर निर्भर रहते हैं। उनमें से कुछ आदिवासी प्रजा उद्योग, धंधा एवं व्यवसाय करते हैं। अपने संग्रहालय में उनकी आजीविका संबंधित विभिन्न सामग्रियों का उत्कृष्ट संकलन है।

कृषि

आदिवासी लोग हल, हँसिया, कसब, सुमर, कुल्हाड़ी आदि जैसे सामान्य उपकरणों का उपयोग कृषि कार्य में करते हैं।

सभी आदिवासीयों के लिए काष्ठ का हल, हँसिया आदि सर्व सामान्य उपकरण हैं।

व्यवसाय

आदिवासी लोग कृषि के सिवाय अन्य लघु और कुटीर उद्योग पर निर्भर करते हैं। उद्योग एवं व्यवसाय से जुड़े ये उपकरण आदिवासी संग्रहालय में मौजूद हैं।

Scanned with OKEN Scanner

संगीत के उपकरण

हम सब जानते हैं कि आदिवासी लोगों के लिए संगीत एवं नृत्य एक अविच्छेद अंग है। अधिकतर धार्मिक एवं विवाहोत्सवों पर नृत्य और संगीत आवश्यक एवं अनिवार्य होता है। शायद ही कोई शुभ प्रसंग नृत्य और संगीत के बिना संपन्न होता होगा। आदिवासी अपने संगीत एवं नृत्य में ढोल, नगारा, थाली, डोबरु, टर्पु आदि वाद्यों का उपयोग करते हैं। ये उपकरण स्थानीय उपलब्ध सामग्री जैसे बांस, कद्दू, काठ, चर्म आदि से वे स्वयं बना लेते हैं।

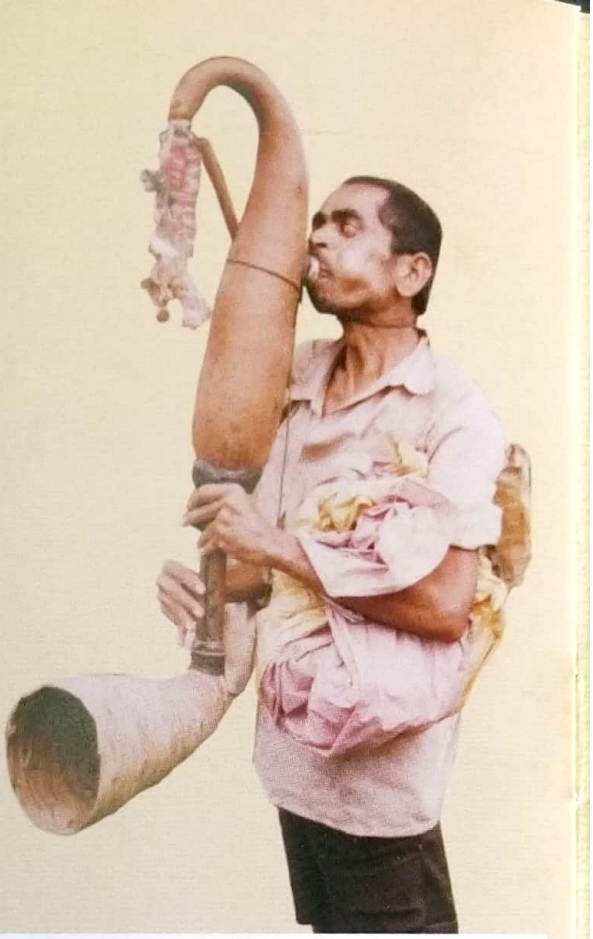

बच्चों के खिलौने

आदिवासी बच्चे बाँस, काठ, कद्दू आदि से स्वयं ही अपने खिलौने बनाते हैं। बाँस की पट्टियों से वे द्विचक्री बनाते हैं जिसके पहिए सचमुच ही घूमते हैं।

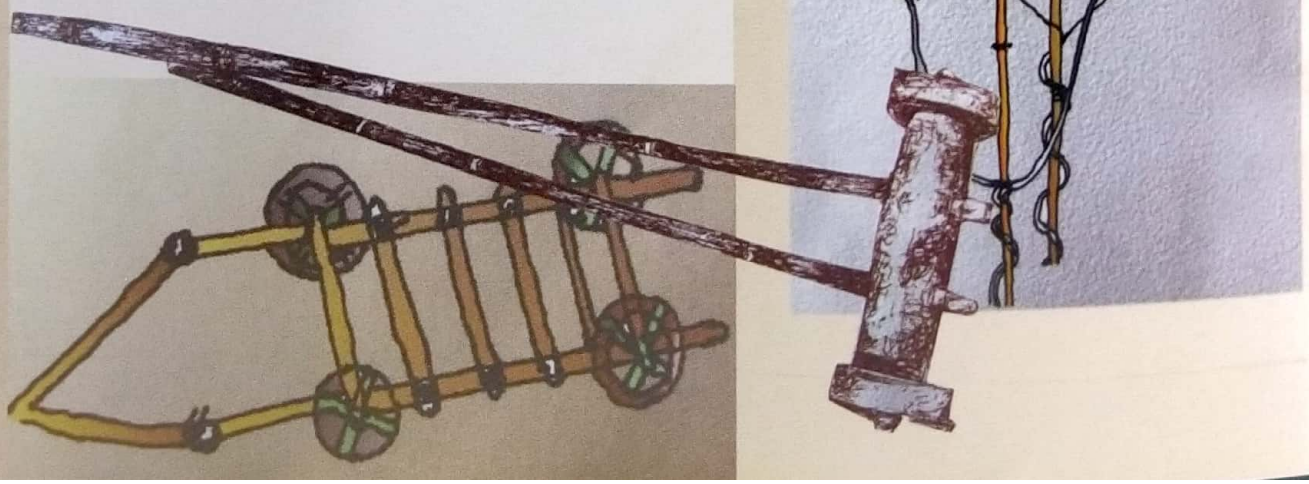

Scanned with OKEN Scanner

अनुसूचित क्षेत्र

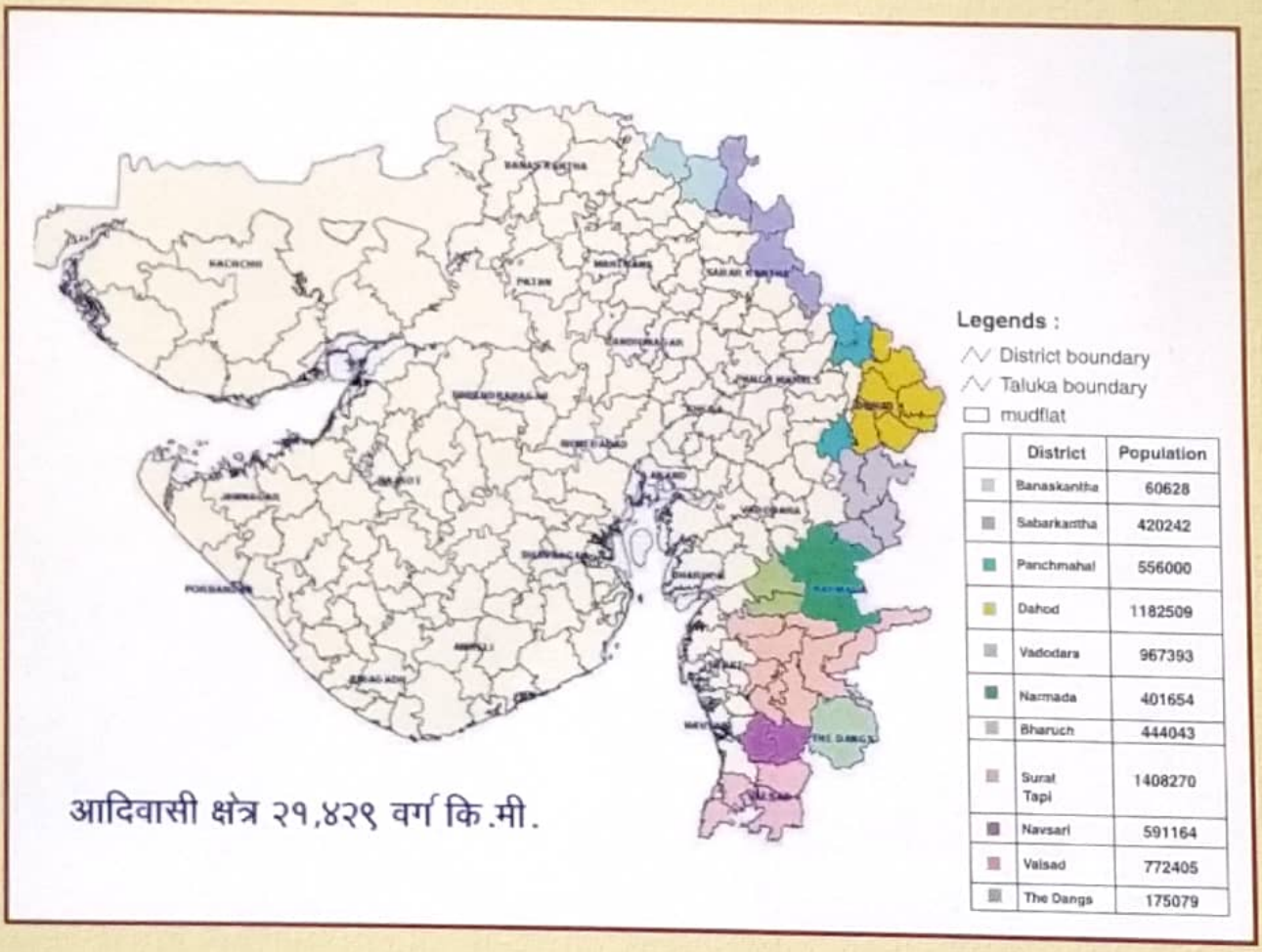

	District	Population
	Banaskantha	60628
	Sabarkantha	420242
	Panchmahal	556000
	Dahod	1182509
	Vadodara	967393
	Narmada	401654
	Bharuch	444043
	Surat Tapi	1408270
	Navsari	591164
	Valsad	772405
	The Dangs	175079

Scanned with OKEN Scanner

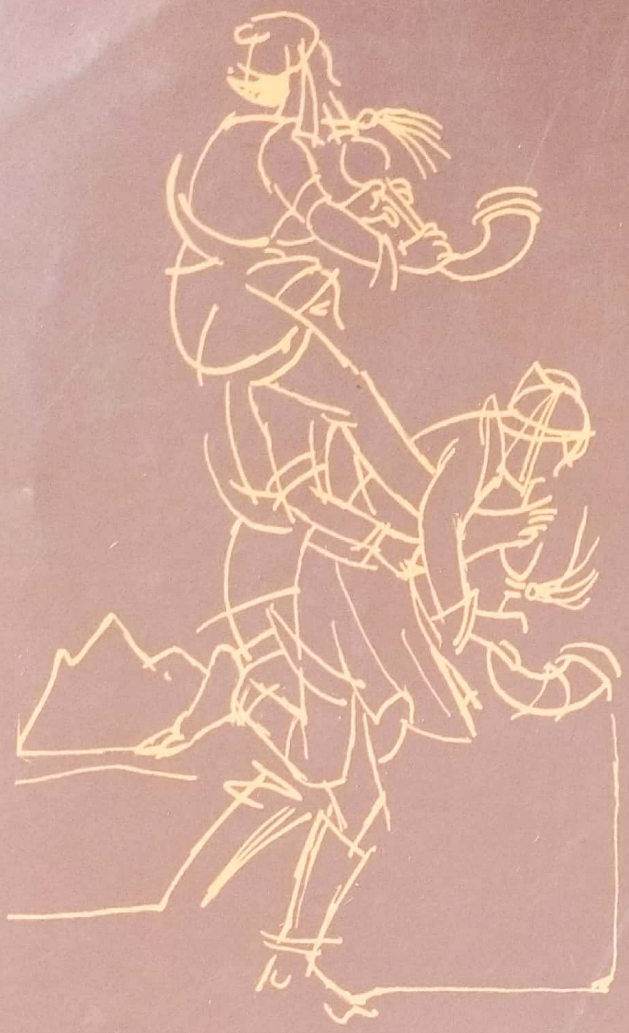

आदिवासी शोध व प्रशिक्षण संस्थान

गूजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद - ३८००१४, गुजरात, भारत.
दूरभाष नंबर : ०७९-२७५४५१६५

Scanned with OKEN Scanner